संकुल की बैठकों के आयोजन के लिए चर्चा पत्र

माह सितंबर - २०१५ अंक – ४

ग्राम सभा की पूर्व तैयारी के लिए छोटे-छोटे समूहों में स्कूल की जानकारी लेने बैठकें आयोजित करें

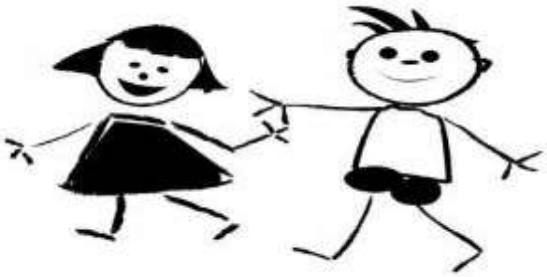

बच्चों को तनाव-रहितमाहौल में दक्षताओं की स्थिति जानने के लिए आवश्यक प्रयास करें

स्कूल की गतिविधियों की बारीकी से परीक्षण कर स्कूल की ग्रेडिंग ग्राम सभा व्दारा करवाएं

अपने स्कूल के विकास के लिए शाला विकास योजना बनाएं

राज्य परियोजना कार्यालय
राजीव गांधी शिक्षा मिशन, बोर्ड आफिस परिसर, पेंशन बाडा
रायपुर, छत्तीसगढ़ |
ईमेल: mis.head@gmail.com

आपसे सीधी बात

धीरे-धीरे संकुलों की बैठकों में अकादमिक चर्चाएँ शुरू होने लगी है | सभी विकासखंडों से आए स्त्रोत व्यक्तियों से शाला ग्रेडिंग के लिए आयोजित प्रशिक्षण के दौरान लिए गए फीडबैक में भी यह बात पता चली | कुछ शिक्षकों ने यह भे बताया कि उन्हें प्रतिमाह के चर्चा पत्र का इन्तजार रहता है | राज्य कार्यालय के ईमेल में बैठकों के बहट से फोटोग्राफ भेजे जा रहे हैं | कुछ लोग सेल्फी विद रीडिंग कार्नर, मुखौटों के साथ भी अपने फोटो भिजवा रहे हैं | बच्चों की पढाई और नियमित उपस्थिति के बारे में किए जा रहे विभिन्न प्रयासों के बारे में भी लोग बताने लगे हैं | कुछ ने छिपकली की कहानी पढ़कर छिपकली एवं अन्य प्राणियों की उम्र संबंधी जानकारी खोजकर हमें भेजी | इस सबसे एक परिवार जैसा माहौल लगने लगा है और ऐसा माहौल महसूस हो रहा है जिसमे हम सब मिलकर गुणवत्ता के लिए कार्य करें |

गत माह सभी जिलों के प्रशिक्षण प्रभारियों की बैठक के दौरान हमने सीधे मोंबाइल से जिलों के विभिन्न संकुलों में संकुल समन्वयकों, शिक्षकों एवं बच्चों से चर्चा की | दंतेवाडा के एक समन्वयक ने तो बच्चों से बात करवाने दूर के एक स्कूल तक जाकर वहां से बच्चों से चर्चा करवाई | बात करते समय भाषा की समस्या स्पष्ट समझ में आई | कई जगहों से प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी बनाकर काम करने की भी जानकारी मिली | हम इस प्रकार तैयार कम्युनिटी को और अधिक मदद करने की तैयारी कर रहे हैं |

इन सबके बावजूद फीडबैक के आधार पर कुछ चीजों में सुधार की आवश्यकता दिखाई दे रही है | संकुल की बैठकों के फोटोग्राफ्स में बैठक में एक कतार में बैठे शिक्षक दिखाई दे रहे हैं जबकि बैठक में गोल घेरे में यदि शिक्षक बैठने की व्यवस्था करें तो हमारी बैठकों में चर्चा का एक बेहतर माहौल मिल सकेगा | इसे तत्काल बदलने की आवश्यकता है | अब समय आ गया है कि चर्चा पत्रों में सुझाए गए विभिन्न कार्यों को समझते हुए, उसका मूल मकसद जानते हुए उन्हें शालाओं में लागू किया जा सके |

प्रत्येक माह के चर्चा पत्र में हम कुछ शिक्षकों के बारे में जानकारी देते हैं जिन्होंने अपने क्षेत्र में कुछ उल्लेखनीय कार्य किया हो | उनके मोबाइल नंबर भी इस उम्मीद के साथ दिए जाते हैं कि आप उनसे कुछ सीख सकें, मार्गदर्शन ले सकें, उन्हें आमंत्रित कर सकें | परन्तु उनसे पता करने पर सौ के आसपास ही फोल काल्स उन्हें मिलना बताया गया है | हमारे पास २७०३ संकुल स्त्रोत केंद्र हैं और प्रत्येक से एक काल तो जाना ही चाहिए | संकुल की बैठकों के दौरान शिक्षकों से उनकी चर्चा हेतु स्पीकर आन कर बात करवानी चाहिए | इससे राज्य के शिक्षक एक दूसरे से जुड़ सकेंगे |

राज्य में इस माह से डॉ. अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान प्रारंभ किया गया है | इस कार्य्रकम के अंतर्गत सभी शालाओं में सोशियल आडिट किया जाएगा | इसकी जानकारी हमारे वेबसाईट में अपलोड की जाएगी | विभिन्न चयनित शालाओं में लगातार अन्य विभागों के अधिकारी, माननीय विधायकगण, माननीय मंत्रीगण भ्रमण करेंगे और शाला विकास के लिए आवश्यक कार्य करेंगे | सुदूर अंचलों में कार्य करने वाले शिक्षकों की अकसर एक शिकायत रहती थी कि उनके द्वारा किए जा रहे अच्छे कार्यों को देखने कोई नहीं आता | अब यह एक अच्छा मौका है जिसमे आप अपने बच्चों की उपलब्धियों, अपने व्दारा किए गए कार्यों को दिखा सकेंगे |

अंत में,कृपया चर्चा पत्र के लिए आप भी सामग्री भेजना शुरू करें |

एजेंडा एक: समीक्षा

अभी तक माह जून से अगस्त तक के चर्चा पत्र में सुझाए गए गतिविधियों में से कितना कार्य स्कूलों में कर लिया गया है और शेष को तत्काल पूरा करने के लिए आवश्यक कार्यवाही |

- कितने शिक्षकों ने अपने अध्यापन में सक्रिय शिक्षण विधि का उपयोग किया ?
- कितने शालाओं के अब डाईस संबंधी जानकारी अपने बाहरी दीवार पर लिख दी गयी है ?
- कितने शिक्षकों ने कागज़ के मुखौटे, खिलौने, माचिस के खाली डिब्बों का उपयोग करना शुरू कर दिया है?
- पिछले महीने कक्षा को माचिस्मय बनाने का उदहारण दिया गया था| इस महीने आप माचिस की तीलियों से बच्चों के साथ गणित की गतिविधियाँ कर सकते हैं| अधिक जानकारी के लिए इस लिंक का उपयोग कर सकते हैं: http://gyanpedia.in/Portals/0/Toys%20from%20Trash/Resources/books/Matchstick.pdf
- संकुल की बैठकों के लिए उपलब्ध सामग्री को अकेले संकुल समन्वयक व्दारा चर्चा करने के बदले विभिन्न टापिक को अलग-अलग शिक्षकों को बांटकर उनसे तैयारी कर बैठक में प्रदर्शन किए जाने का काम कितने संकुलों में शुरू हुआ है ?
- कितने शिक्षक किसी न किसी प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी में शामिल हुई हैं ?
- कितने लोग अपनी कक्षा के सामने अधिगम सूचकांक/ लर्निंग इंडिकेटर का उपयोग कर बच्चों को सिखाने एवं आंकलन करने का कार्य कर रहे हैं ?
- आपके व्दारा बच्चों के समक्ष कितने प्रयोग करके दिखाए गए हैं ? उनके क्या अनुभव रहे हैं ?
- उच्च प्राथमिक शालाओं में आयोजित बैठकों के क्या आनुभव रहे हैं ? बच्चों की क्या प्रतिक्रया रही है ?
- प्रथम formative पर चर्चा और आने वाले परीक्षा की तैयारी, प्रथम formative संचालन में आई दिक्कतें, सुझाव
- बच्चों के अभिव्यक्ति कौशलों के विकास के लिए उपलब्ध समय सारिणी के दौरान किए जा रहे कार्य |
- उच्च शालाओं में बच्चों को ले जाते हुए पढाई के लिए प्रोत्साहन |
- समुदाय से युवाओं/ साथियों को अध्यापन कार्य में सहयोग हेतु प्रोत्साहन देना |
- शाला/ अपनी कक्षाओं को आकर्षक बनाने के लिए क्या क्या कार्य किया जा रहा है ?
- बच्चों के पठन एवं गणितीय कौशलों में सुधार हेतु किए जा रहे प्रयास ?
- प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर पर विज्ञान के प्रशिक्षण को प्रारंभ किए जाने की स्थिति |

उपरोक्त सभी बातें आपके संकुल की सभी शालाओं में प्रारंभ होकर लगातार जारी रहना आपकी संयुक्त जिम्मेदारी है | आपको सभी शालाओं में नियमित भ्रमण कर इन सबके प्रारंभ करने एवं अपने आप नियमित ऐसी बातें शाला में निर्वाध चलती रहे, इस पर ध्यान देना होगा और इनका लगातार विस्तार करना होगा | इन सबके लिए ऊपर से निर्देश आने पर ही कार्य करने की परंपरा अब बंद करनी होगी |

एजेंडा दो: अब्राहम लिंकन का पत्र अपने पुत्र के शिक्षक के नाम: शिक्षक दिवस पर विशेष

हे शिक्षक !
मैं जानता हूं और मानता हूं
कि न तो हर व्यक्ति सही होता है
और न ही होता हैं सच्चा
किंतु तुम्हें सिखाना होगा कि
कौन बुरा है और कौन अच्छा।
दुष्ट व्यक्तियों के साथ-साथ आदर्श प्रणेता भी होते हैं,
स्वार्थी राजनीतिज्ञों के साथ-साथ समर्पित नेता भी होते हैं
दुश्मनों के साथ-साथ मित्र भी होते हैं,
हर विरूपता के साथ सुन्दर चित्र भी होते हैं।
समय भले ही लग जाए, पर
यदि सिखा सको तो उसे सिखाना
कि पाए हुए पांच से अधिक मूल्यवान है –
स्वयं एक कमाना।
पाई हुई हार को कैसे झेले, उसे यह भी सिखाना
और साथ ही सिखाना, जीत की खुशियां मनाना।
यदि हो सके तो उसे ईर्ष्या या द्वेष से परे हटाना
और जीवन में छिपी मौन मुस्कान का पाठ पठाना।
जितनी जल्दी हो सके उसे जानने देना
कि दूसरों को आतंकित करने वाला स्वयं कमजोर होता है,
वह भयभीत व चिंतित है
क्योंकि उसके मन में स्वयं चोर होता है।
उसे दिखा सको तो दिखाना –
किताबों में छिपा खजाना।
और उसे वक्त देना चिंता करने के लिए
कि आकाश के परे उड़ते पंछियों का आह्लाद,
सूर्य के प्रकाश में मधुमक्खियों का निनाद,
हरी-भरी पहाड़ियों से झांकते फूलों का संवाद,
कितना विलक्षण होता है – अविस्मरणीय, अगाध्
उसे यह भी सिखाना –
धोखे से सफलता पाने से असफल होना सम्माननीय है।
और अपने विचारों पर भरोसा रखना अधिक विश्वसनीय है।
चाहें अन्य सभी उनको गलत ठहरायें
परंतु स्वयं पर अपनी आस्था बनी रहे यह विचारणीय है।
उसे यह भी सिखाना कि वह सदय के साथ सदय हो,
किंतु कठोर के साथ हो कठोर।
और लकीर का फकीर बनकर,
उस भीड़ के पीछे न भागे जो करती हो – निरर्थक शोर।
उसे सिखाना
कि वह सबकी सुनते हुए अपने मन की भी सुन सके,
हर तथ्य को सत्य की कसौटी पर कसकर गुन सके।
यदि सिखा सको तो सिखाना कि वह दुःख में भी मुस्कुरा सके,
घनी वेदना से आहत हो, पर खुशी के गीत गा सके।
उसे यह भी सिखाना कि आंसू बहते हों तो उन्हें बहने दे,
इसमें कोई शर्म नहीं कोई कुछ भी कहता हो कहने दे।
उसे सिखाना –
वह सनकियों को कनखियों से हंसकर टाल सके
पर अत्यन्त मृदुभाषी से बचने का ख्याल रखे।
वह अपने बाहुबल व बुद्धिबल का अधिकतम मोल पहचान पाए
परंतु अपने हृदय व आत्मा की बोली न लगवाए।
वह भीड़ के शोर में भी अपने कान बन्द कर सके
और स्वतः की अंतरात्मा की सही आवाज सुन सके
सच के लिए लड़ सके और सच के लिए अड़ सके।
उसे सहानभूति से समझाना
पर प्यार के अतिरेक से मत बहलाना।
क्योंकि तप-तप कर ही लोहा खरा बनता है,
ताप पाकर ही सोना निखरता है।
उसे साहस देना ताकि वक्त पड़ने पर अधीर बने
सहनशील बनाना ताकि वह वीर बने।
उसे सिखाना कि वह स्वयं पर असीम विश्वास करे,
ताकि समस्त मानव जाति पर भरोसा व आस धरे।
यह एक बड़ा-सा लम्बा-चौड़ा अनुरोध् है
पर तुम कर सकते हो, क्या इसका तुम्हें बोध् है?
मेरे और तुम्हारे दोनों के साथ उसका रिश्ता है
सच मानो, मेरा बेटा एक प्यारा-सा नन्हा सा फरिश्ता है!

अब्राहम लिंकन ने यह पत्र अपने बेटे के शिक्षक को लिखा था। लिंकन ने इसमें वे तमाम बातें लिखी थीं जो वे अपने बेटे को सिखाना चाहते थे। इसको पहले सभी स्वयं पढ़ें, समझें फिर एक-एक लाइन पर चर्चा करवाएं | आप एक शिक्षक के रूप में इनमें से क्या-क्या कर रहे हैं? आप अपने बच्चे के शिक्षक के लिए ऐसा ही एक पत्र लिखें और शेयर करें |

एजेंडा तीन: शौचालय बन गए, अब आगे क्या ?

आप सबके सक्रिय सहयोग से राज्य की सभी शालाओं में शौचालय बन गए हैं या अपने अंतिम चरण में हैं | अब हमें देखना होगा कि इन शौचालयों का सही-सही उपयोग और मेंटेनेंस या रख-रखाव होता रहे | स्कूल में शौचालयों के सही उपयोग के लिए निम्नलिखित चीजें सुनिश्चित करेंगे:

१. स्कूलों में प्रधानाध्यापक शौचालयों के रख-रखाव के लिए जिम्मेदार होंगे |
२. इस हेतु पंचायत से भी बजट लेने का प्रयास करें |
३. बच्चों के व्यवहार परिवर्तन के लिए लगातार ध्यान दिया जाए और शौच एवं स्वच्छता से संबंधित अच्छी आदतें सिखाई जाएं |
४. यह देखें की शौच के लिए भीतर सदैव पानी उपलब्ध हो और बच्चे उपयोग के बाद अच्छे से पानी से उसे साफ़-सुथरा रखें |
५. हाथ धोने के लिए साबुन की व्यवस्था हो |
६. टायलेट की सफाई के लिए ब्रश एवं फिनाइल आदि उपलब्ध हों |
७. बच्चों के माध्यम से घरों में भी पालक शौचालय बनाने में रूचि लेने लगें ऐसी कोशिशें की जाएँ |
८. शौचालयों में कोई अपशब्द न लिखा गया हो |
९. बच्चों की संख्या के अनुसार अधिक शौचालय अथवा मूत्रालय में अधिक लोड हो तो आवश्यकतानुसार और शौचालय/ मूत्रालयों की मांग रखें |

एजेंडा चार: क्वालिटी से कोम्प्रोमाइज नहीं

एक बार एक जर्मन एक निर्माणाधीन मंदिर देखने पहुंचा | वहां उसने एक मूर्तिकार को भगवान की मूर्ति बनाते देखा| उसने उस मूर्तिकार के पास ही एक और भगवान की मूर्ति पडी देखी जो कि बिलकुल वैसी ही थी जैसा वह मूर्तिकार बना रहा था | जर्मन को इस बात पर कुछ आश्चर्य हुआ क्योंकि एक ही प्रकार की दो मूर्तियाँ किसी एक मंदिर में बनाने की क्या आवश्यकता है | उसने उस मूर्तिकार से पूछा-"क्या इस मंदिर में एक जैसी दो मूर्तियाँ लगाई जा रही है?" मूर्तिकार जो कि अपने काम में तल्लीन था उसने बिना सर उठाए कहा, "नहीं, हमें केवल एक ही मूर्ति चाहिए, परन्तु यह मूर्ति उसके आख़िरी चरण में खराब हो गयी इसलिए अब मैं दूसरी मूर्ति बना रहा हूँ | " जर्मन ने उस लेटी हुई मूर्ति को ध्यान से देखा तो उसे कोई डेमेज दिखाई नहीं दिया | उसने फिर मूर्तिकार से पूछा की मुझे तो कोई भी डेमेज दिखाई नहीं दे रहा है ? इस मूर्ति को कहाँ नुकसान हुआ है ? उस मूर्तिकार ने फिर अपने काम पर ही तल्लीन रहते हुए जवाब दिया कि उस मूर्ति की नाक में एक छोटी सी स्क्रेच आ गयी है | जर्मन ने फिर उसे पूछा कि यह मूर्ति कहाँ लगाई जानी थी ? तब उस मूर्तिकार ने बताया कि इसे २५ फीट ऊंची एक खंबे में लगाना है |
उस जर्मन को आश्चर्य हुआ | उसने फिर उस मूर्तिकार से पूछा, "इस मूर्ति को इतने पास से देखने पर भी मुझे कोई नुकसान नहीं दिख रहा है तो जब इसे २५ फीट ऊपर स्थापित किया जाएगा तो किसे यह स्क्रेच दिखाई देगा ? इसी मूर्ति का उपयोग करने के बदले इतनी मेहनत कर फिर से दूसरी मूर्ति क्यों बना रहे हो ? "
मूर्तिकार ने थोड़ी देर के लिए अपना काम रोक कर हंसते हुए बोला, "इस मूर्ति में हुए दरार के बारे में दो लोगों को पता चलेगा | एक मैं और दूसरा भगवान् | इसीलिए मैं दूसरी मूर्ति बना रहा हूँ | "

अच्छा काम करने या अच्छी क्वालिटी प्राप्त करने की इच्छा भीतर से आती है और चाहे सामने वाला आपके काम की तारीफ़ करे अथवा नहीं, आप अपने काम का सबसे अच्छा आउटपुट देना चाहेंगे | यह भाव भीतर से आता है | यह दूसरों को दिखाने के लिए नहीं वरन अपने स्वयं के संतोष के लिए ही होता है |

मूर्तिकार ने अपनी बनाई मूर्ति की नाक में एक छोटी सी दरार आने पर नई मूर्ति बनाना शुरू कर दिया | हम अपनी कक्षाओं में जब देखते हैं कि बच्चों को हमारी पढाई समझ में नहीं आ रहा है तो हममें से कितने लोग अपने पढ़ाने के तरीकों में कुछ बदलाव लाने की कोशिश करते हैं ? कितने लोग इस बात को सुनिश्चित करते हैं कि उनकी कक्षा के सभी बच्चों को सब कुछ अच्छे से आ जाए ? आप भी एक मूर्तिकार ही हैं | मूर्तिकार अपने काम में पूरी तरह से तल्लीन था | हममें से कितने लोग बिना कोई समय खोए अपना काम करते रहते हैं ? प्रतिदिन कितना समय बच्चों को पढ़ाने में लगाते हैं ? सभी बच्चों को सभी कुछ समझ में आ जाए, इसके लिए आप सभी मिलकर अपने संकुल की शालाओं में क्या-क्या करेंगे, सोचें और तय करें |

एजेंडा पाँच: शैक्षिक दर्पण- स्वयं से पूछें

हमारे एक साथी ने हमें अपने आप में सुधार के लिए दर्पण का आइडिया भेजा है जिसे हम आपके साथ शेयर कर रहे हैं | इसमें शिक्षक एवं बच्चे अपने आप से दर्पण के सामने खड़े होकर कुछ प्रश्न कर इस प्रकार कर सकते हैं:

शिक्षकों के लिए प्रश्न:

१. क्या मैं आज शाला में समय पर आया ?
२. मैंने आज बच्चों को कितना समय दिया ?
३. क्या मैंने कक्षा में जाने के पूर्व कुछ तैयारी की ?
४. क्या मुझे आज पढ़ाने में आनन्द आया ?
५. क्या आज बच्चों ने मुझसे कुछ प्रश्न पूछे ?
६. क्या आज कक्षा में किसी नई बात पर चर्चा हुई ?
७. मैंने स्वयं आज कौन सी नई चीज का अध्ययन किया ?
८. आज मैंने बच्चों की सफाई पर ध्यान दिया ?
९. आज मैंने अपने साथियों से अपने बच्चों की प्रगति एवं उनकी समस्याओं पर चर्चा की ?
१०. क्या आज मैंने किसकी सहायता की ?

बच्चों का दर्पण

१. आज मेरी वेश-भूषा कैसी है ?
२. आज मैंने विद्यालय से क्या नया सीखा ?
३. आज मैंने अपने दोस्तों से क्या अच्छा सीखा ?
४. आज शाला आने से पूर्व क्या क्या तैयारी की ?
५. क्या कुछ समझ न आने पर मैंने प्रश्न पूछा ?
६. क्या आज मैंने घर में पाने स्कूल की पढाई पर बातचीत की ?
७. क्या मैंने स्कूल में सिखाई बातों को घर में अभ्यास किया ?
८. क्या आज मैंने अपने समय का अच्छे से उपयोग किया ?
९. क्या मैंने आज अपने माता-पिता की सेवा की ?
१०. क्या आज मैंने किसकी सहायता की ?

मित्रों सबसे दुनिया का बेहतरीन न्यायाधीश स्वयं में विराजमान होता है। इसी कारण आत्मावलोकन हेतु हमें अपने सम्मुख प्रस्तुत होना श्रेष्ठ उपाय है। बाहरी सुन्दरता हेतु प्रत्येक विद्यालय में दर्पण होता है, किन्तु शैक्षिक श्रृंगार हेतु शैक्षिक दर्पण अत्यावश्यक है।

इसे आप अपनी शाला में लगाने के बारे में सोच सकते हैं | जिन लोगों ने इसे लगाया, वो कृपया इसके अनुभव् एवं सेल्फी अवश्य हमारे साथ शेयर करें |

एजेंडा छः : आपके लिए माथा-पच्ची

श्यामपट पर चित्र बनाकर हल करवाएं -

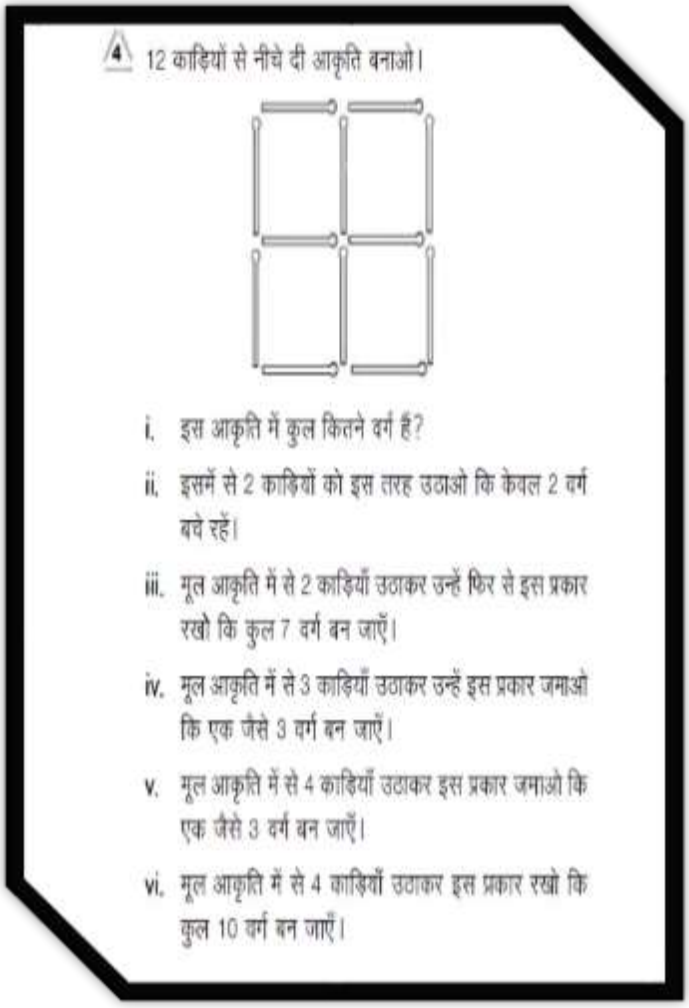

"I'm not a HANDSOME guy
But I can give my
HAND-TO-SOME One
Who needs help
Beauty is in heart
not in face"

-Dr. Abdul Kalam Azad

एजेंडा सात : स्थानीय संसाधनों, संस्कृति एवं परंपराओं में निहित विज्ञान:

नीचे लिखे पैरा को ध्यान से सबके सामने पढ़ें:

In 1917 Colgate came to India and said "why do you guys still use salt and charcoal to clean ur teeth, use our paste!!".
Now in 2015, Colgate is advertising asking "does ur toothpaste have salt in it?" And goes on to say "our brush is coated with charcoal which is GooD for white teeth".
It took them 95+years to know that

भारत में हम बरसों से कोयले, नीम, नमक का उपयोग कर दाँत साफ़ करते रहे हैं | बरसों से हमारे पूर्वज अपने तकलीफों को दूर करने एवं और भी अनेक कारणों से अपने शरीर में गोदना करवाया करते थे | आज हम उसे शौक से टैटू कहते हैं | हमारे पूर्वजों के पास मौसम का अनुमान लगाने की बेहतर व्यवस्थाएं थी | हम धीरे-धीरे यह सब छोड़ते जा रहे हैं और हमारे ज्ञान एवं परंपराओं में निहित विज्ञान का अब विदेशी इस्तेमाल करने लगे हैं |
ऐसे में हमें अपने संस्कृति एवं परंपराओं में छिपे विज्ञान को सामने लाने की जरूरत है | कृपया अपने आसपास छिपी ऐसी चीजों को खोजकर हमसे शेयर करें | हम इसका संकलन कर उपयोग हेतु शेयर करना चाहेंगे |

एजेंडा आठ: सी.सी.ई. से जुड़े कुछ शब्दों को समझें

1. Diagnostic: आप अपने संकुल की बैठक के दौरान खाने के लिए कुछ छत्तीसगढ़ी व्यंजन बनाना चाहते हैं| आप अपने संकुल के शिक्षकों से पूछते हैं कि कौन सा व्यंजन खाना चाहेंगे ? सभी से पूछने के बाद आप यह निर्णय लेते हैं कि अधिकतम लोगों को मुर्रा या मुरमुरा लड्डू खाना चाहते हैं|
2. **Formative:** आप मुर्रा लड्डू बनाते समय पूरी प्रक्रिया के दौरान चखते रहते हैं | मुर्रा ठीक है अथवा नहीं, उसमें कुरकुरापन है अथवा नहीं? गुड अच्छा है, उसमें कचरा तो नहीं है? गुड को कितना गर्म करना है, कितना पानी मिलाना है? अच्छे लड्डू बने, इसके लिए और क्या मिलाना चाहिए ? सभी स्तरों पर आप टेस्ट करते रहते हैं |
3. **Summative:**संकुल के सभी शिक्षक लड्डू खाने के बाद यह निर्णय लेते हैं कि लड्डू वास्तव में बहुत अच्छे बने हैं, स्वादिष्ट हैं |

एजेंडा नौ: कहानी सुनाना:

राज्य शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद् व्दारा बच्चों को स्थानीय लोगों से कहानी सुनाने की गतिविधि को प्रोत्साहित किया जा रहा है | आप भी इसकी योजना बनाकर बच्चों को सीखने के अवसर दें | हमसे किए गए कार्यों को फोटो के साथ शेयर करें |

एजेंडा दस : बच्चों के लिए वैज्ञानिक सोच के लिए National Innovation Foundation व्दारा अवार्ड- मौका ना चूकें

National Innovation Foundation व्दारा विगत कई वर्षों से स्कूली बच्चों से उनके आसपास की विभिन्न समस्याओं को वैज्ञानिक तरीके से निदान हेतु सोचे/ कल्पना किए गए विभिन्न उपायों को आमंत्रित किया जाता है ताकि उनमें से बेहतर उपायों का चयन कर उन्हें सम्मानित किया जा सके | गत कई वर्षों से यह अवार्ड १५ अक्तूबर को डा. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम व्दारा उनके जन्मदिवस के दिन ही घोषित किया जाता रहा है |

गत वर्ष इस अवार्ड के लिए हमारे देश के ३५९ जिलों से भारी संख्या में प्रविष्टियाँ भेजी गयी थी जिनमें से चयनित बच्चों को आई.आई.एम. अहमदाबाद में पूर्व राष्ट्रपति डा. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के हाथों सम्मानित किया गया था | इस अवार्ड के साथ ख़ास बात यह होती है कि बच्चों व्दारा सोचे गए आईडियाज पर कुछ वैज्ञानिक कार्य करते हैं और उन्हें मूर्त रूप देने के बाद उस नवीन आविष्कार का पेटेंट उस विचार को सोचे गए बच्चे के नाम से किया जाता है |

इस बार बस्तर एवं रायगढ़ में आयोजित राज्य स्तरीय विज्ञान प्रशिक्षण सह कार्यशाला में इस मुददे पर चर्चा हुई थी और यह सुझाव दिया गया था कि बच्चों को उनके आसपास की समस्याओं को विज्ञान की मदद से हल करने हेतु प्रेरित किया जाए और अपनी परंपराओं में निहित विज्ञान के तत्वों को सामने लाने का प्रयास करें | जरूरी नहीं है कि ये मुद्दे बहुत जटिल और गूढ़ विज्ञान से जुड़े हुए हों | अपने आसपास की वास्तविक समस्याओं को हल करने वाले कुछ नवाचारी उपायों को ही इसमें बच्चों के माध्यम से निकालते हुए सामने लाना होगा | बच्चों व्दारा भेजे गए कुछ विचार जिनके आधार पर सामग्री निर्मित की गयी, उनके कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं:

पटना के कक्षा आठ की छात्रा शालिनी कुमारी ने एक ऐसे व्हील चेयर बनाने का आईडिया दिया जो आवश्यकता पड़ने पर एडजस्टेबल वाकर बन जाता है | उनके नाम से इस उपकरण का पेटेंट कराया गया और उन्हें इसके लिए लायसेंस की राशि के साथ बिक्री के आधार पर रायल्टी का प्रावधान किया गया |
एक बच्ची ने अपनी माँ को कपडे धोने में होने वाली तकलीफ को देखकर सायकल से चलने वाली वाशिंग मशीन बनाई जो बिना बिजली के चलती है |
एक ऐसा टार्च का आइडिया दिया गया जिसमें उसे पकड़ने वाले को सामने के अलावा नीचे भी रोशनी दिखाई देने के लिए अलग से व्यवस्था की गयी थी |
नारियल पेड़ पर चढने के लिए मशीन का उपयोग
सायकल को बोट में बदलने के लिए उपाय

आप भी बच्चों को अपने आसपास की दुनिया के बारे में सोचकर सुधार हेतु कुछ नए आइडियाज सोचने के अवसर एवं अनुकूल माहौल प्रदान करें | विचार के कुछ क्षेत्र इस प्रकार हो सकते हैं:

आपके आसपास मच्छर की समस्या दूर करने के लिए क्या उपाय हो सकते हैं ?
फसल को विभिन्न प्रकोप/ जानवरों से बचाने के लिए कुछ उपाय ?
सूचनाओं को ग्राम एवं सुदूर अंचलों तक आसानी एवं तेजी से पहुंचाने हेतु उपाय ?
ग्रामीण अंचलों में स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को दूर करने हेतु कुछ उपाय ?
भवनों को मौसम एवं आपदा अनुकूल बनाने कुछ सरल उपाय ?

आप बच्चों को किसी भी क्षेत्र में सोचने के अवसर देते हुए उनसे उनके मौलिक आइडियाज निकलवाएँ |

आपको अपने जिले के कक्षा एक से बारहवीं तक के बच्चों से चर्चा कर निर्धारित प्रारूप में बच्चों के स्वयं के हाथ से लिखित सुझावों को निम्नलिखित पते पर दिनांक ३१ अगस्त, २०१५ तक सीधे डाक से अथवा ईमेल से ignite@nifindia.org को भेजे जाने की व्यवस्था करें | यदि बच्चे सीधे अपने प्रस्ताव आनलाइन भेजना चाहें तो वे http://nif.org.in/submitidea.php पर सीधे अपनी जानकारी भेज सकते हैं | डाक से भेजने का पता है :
Dr. APJ Abdul Kalam IGNITE Awards
National Innovation Foundation-India,
Satellite Complex,Premchand Nagar Road,
Vastrapur, Ahmedabad 380 015, Gujarat

अपनी प्रविष्टियां निम्नलिखित क्षेत्रों के लिए भेजी जा सकती है:

अपने दैनिक जीवन से जुडी समस्याओं को टेकनालाजी का उपयोग कर हल निकाल पाना |
किसी के क्षमता निर्माण, नुकसान को कम करना, संसाधनों की बचत करना, आउटपुट को बढ़ाना आदि के लिए वास्तविक परियोजनाएं तैयार कर पाने हेतु सुझाव देना |
अपने आसपास बड़े-बुजुर्गो से जानकारी लेकर अपने परंपराओं के निहित बेहतर उपायों/ सुझावों की जानकारी देना |
अपने आसपास किसी नवाचारी व्यक्ति के कार्यों की जानकारी बच्चों व्दारा उपलब्ध कराना |
और अधिक जानकारी के लिए वेबसाईट http://nif.org.in/ignite से जानकारी ली जा सकती है |
इस बार चूक गए, अगले साल के लिए अभी से भेजें |

इनके कार्यों को जाने:

हर बार हम अपने अपने क्षेत्र में कुछ अच्छा काम कर रहे शिक्षकों की जानकारी अपने चर्चा पत्र में देने का प्रयास करते हैं ताकि उनके अच्छे कामों से प्रेरणा लेकर आप भी अपने संकुल में ऐसे ही कुछ और शिक्षक तैयार कर सकें | परन्तु जैसा अपहाले लिखा गया ऐसा देखा गया कि आप लोग इस प्रकार से एक दूसरे से सीखने में उतनी रूचि नहीं ले रहे हैं | फिर भी हम अपनी ओर से पुनः प्रयास कर रहे हैं |

इस बार हम आपका परिचय दो शिक्षिकाओं से कर रहे हैं जो राज्य में स्कूली बच्चों को कार्टून विधा का उपयोग कर सीखना-सिखाना रोचक करने में लगे हुए हैं | इन्होने अपनी शाला में बच्चों के साथ मिलकर खूब सारे कार्टून बनाया है | बच्चों के लिए आवश्यक सुविधाएं स्वयं की कोशिश से करती रहती हैं | अपने कार्यों को बड़े ही व्यवस्थित तरीके से करती हैं |

इनमे से पहली हैं – अंबिकापुर से श्रीमती शोभा सिंह (8889456154) और दूसरी हैं नारायणपुर से श्रीमती रंगीता सेनगुप्ता (9424131508)

इन्होने अपने बारे में ज्यादा कुछ नहीं बताया है और ना ही हमने ज्यादा कुछ जानकार आपको उपलब्ध कराने की कोशिश की है | आपको यदि इनसे कुछ सीखकर अपने संकुल में भी शिक्षकों को प्रेरित करना चाहते हैं तो बैठक के दौरान फोन उठाएं और अपने शिक्षकों से चर्चा करवाएं |

इस कोमिक स्ट्रिप के माध्यम से आप कौन-कौन से विषय पढ़ा सकते हैं ? चर्चा कर ऐसे और क्षेत्र पहचान कर कोमिक स्ट्रिप बनाकर हमारे साथ शेयर करें | अंबिकापुर/ धमतरी एवं नारायणपुर के ४०-४० शिक्षक इस क्षेत्र में काम कर रहे हैं | इन्होने अपना एक व्हात्सेप्प ग्रुप भी बनाकर रखा है | आप भी अपने आइडियाज एक दूसरे से शेयर करें |

जाते जाते:

इस बार शिक्षक दिवस की आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं ! कैसे मनाया हमसे शेयर करें |

संकुलों की बैठकों के आयोजन के लिए सभी जिलों को माह जून से नवंबर, २०१५ तक की राशि जारी की जा चुकी है | अपने संकुल के शिक्षकों को अब तक के चर्चा पत्र के बारे में पूरी जानकारी होनी चाहिए | उनके व्दारा इनमे बताई बातों को अपने स्कूल में पालन करना भी आपको सुनिश्चित करना होगा |

दिनांक चार सितंबर को शिक्षक दिवस के परिप्रेक्ष्य में प्रधानमंत्रीजी बच्चों से रेडियो/ टी.वी. से रूबरू होंगे |

इस माह आपको अपने शाला में सोशियल आडिट करवाना है | इसमें अधिक से अधिक पालकों एवं समुदाय के सदस्यों की उपस्थिति हेतु बच्चों के माध्यम से सभी को आमंत्रण पर अवश्य भिजवाएं |

प्रत्येक कक्षा के कम से कम २०% बच्चों की विभिन्न दक्षताओं जैसे पढ़ना, लिखना, अभिव्यक्ति, गणित, विज्ञान, आसपास की समझ, सूझबूझ आदि से संबंधित सवाल तैयार कर पूछे जाने की व्यवस्था करें |

बच्चों से इस प्रकार के मूल्यांकन के लिए अपने समीप की उच्च कक्षा में अध्यापन कराने वाली शालाओं के शिक्षकों को आमंत्रित किया जाए |

प्राथमिक कक्षाओं का मूल्यांकन उच्च प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों का मूल्यांकन निकट के हाई-स्कूल के शिक्षक कर सकते हैं | ऐसा करने से यह आम शिकायत कि हम क्या करें, पिछली कक्षा से ही बच्चे कुछ सीखे बिना आते हैं, पर कुछ नियन्त्रण लग सकेगा |

मूल्यांकन से सबंधित दस्तावेज अपनी शाला में सुरक्षित रखें क्योंकि इसके बाद लगातार आपकी शालाओं में भ्रमण होगा | बच्चों को पढ़ते हुए मोबाइल से वीडियो भी लिया जा सकता है |

डॉ. अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान में अब हमको यह सुनिश्चित करना होगा कि सभी बच्चों को उनकी कक्षा एवं आयु अनुरूप सब कुछ अच्छे से आ जाए | इसलिए अब ठोस योजना बनाकर मिलकर तत्काल काम शुरू करना होगा | गुणवत्ता के साथ अब कोई समझौता नहीं करें | **मूर्तिकार की कहानी याद है ना !**

संकुल समन्वयक या शिक्षक अब चाहें तो सीधे अपने चर्चा पत्र हमारे वेबसाईट www.ssachhattisgarh.gov.in /pedagogy से डाउनलोड कर सकते हैं | अब तक जारी सारे चर्चा पत्र इसमें उपलब्ध कराए जा रहे हैं | आपके संकुलों में चर्चा पत्र के माध्यम से क्या क्या हो रहा है, आपके संकुल के ऐसे शिक्षक हो अन्य शिक्षकों के लिए प्रेरणास्त्रोत हो सकते हैं, के बारे में जानकारी लेकर फोटो समेत हमें भेजने की व्यवस्था करें ताकि हम उन्हें आगे के अंकों में स्थान दे सकें |

मस्तूरी, बिलासपुर के शिक्षक संकुल की बैठकों में मुखौटे बनाते हुए